License Information

Study Notes - Book Intros (Tyndale) (Hindi) is based on: Tyndale Open Study Notes, Tyndale House Publishers, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes - Book Intros (Tyndale)

यिर्मयाह

जब परमेश्वर ने यिर्मयाह को यहूदा राज्य को उसके आसन्न विनाश के बारे में चेतावनी देने के लिए बुलाया, तो राज्य अपेक्षाकृत समृद्ध, स्वतंत्र और सुरक्षित था। लेकिन यहूदा की किस्मत नाटकीय रूप से बदल गई जब बेबीलोन के नबूकदनेस्सर द्वितीय ने इस क्षेत्र में अपनी शक्ति का दावा किया। यरूशलेम शहर को नष्ट करने और उसके नागरिकों को बेबीलोन में बँधुआई में ले जाने से पहले यहूदा ने बीस साल तक उसके भारी हाथों में कष्ट झेले। इन घटनाओं के दौरान, यिर्मयाह ने न्याय और विनाश की चेतावनी दी, जबकि इन घोषणाओं से होने वाले दर्द और संघर्ष के अपने अनुभव को विशिष्ट रूप से दर्ज किया। यिर्मयाह ने अपने लोगों से उनके पास लौटने और उद्धार प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की भावुक विनती को खूबसूरती से व्यक्त किया, और उसने इस्राएल को बहाल करने के परमेश्वर के वादे की भी घोषणा की।

यिर्मयाह

परिस्थिति

यिर्मयाह के जन्म से पहले के दशकों के दौरान, अश्शूर ने प्राचीन पश्चिमी एशिया पर प्रभुत्व स्थापित किया, जिसमें कुछ समय के लिए मिस्र भी शामिल था। यहूदा के राजा मनश्शे अश्शूर के अधीनस्थ बन गए, अश्शूरी देवताओं के प्रति निष्ठा की शपथ ली, और अपने लंबे शासनकाल के अधिकांश समय में मूर्तियों की पूजा की (686–642 ईसा पूर्व; देखें 2 रा 21:1–7)। परिणामस्वरूप, यहूदा का राज्य एक आत्मिक बंजर भूमि बन गया (लेकिन देखें 2 इति 33:10–17)। मनश्शे के पुत्र आमोन ने अपने संक्षिप्त शासनकाल के दौरान अपने पिता के नकारात्मक उदाहरण का अनुसरण किया (2 रा 21:21)। जब यरूशलेम में महल के कुछ सेवकों ने आमोन की हत्या कर दी (2 रा 21:23–24), तो लोगों ने जल्दी से आमोन के आठ वर्षीय पुत्र, योशियाह, को यहूदा का राजा बना दिया।

योशियाह ने अपने पूर्वजों के मूर्तिपूजा के समर्थन को अस्वीकार करते हुए प्रभु की सेवा की। अपने शासन के बारहवें वर्ष में, उसने आदेश दिया कि मूर्तिपूजकों की मूर्तियों और वेदियों को नष्ट कर दिया जाना चाहिए (2 इति 34:3–7)। सिंहासन पर अपने अठारहवें वर्ष में, उसने मंदिर की मरम्मत के लिए धन मुहैया कराया ताकि यहूदा के याजक और लोग एकमात्र सच्चे परमेश्वर की आराधना कर सकें (2 इति 34:8)। इन मरम्मतों के दौरान, व्यवस्था की पुस्तक, जो मनश्शे के शासनकाल के दौरान भुला दी गई थी, को पुनः उद्धार किया गया। इसमें यहूदा के पापों का स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया था, और व्यवस्था की पुस्तक मिलने के तुरंत बाद, इसकी शिक्षाएँ यिर्मयाह के भविष्यद्वाणियों का आधार बन गई।

यिर्मयाह का जन्म यरूशलेम के उत्तर-पूर्व में स्थित अनातोत गांव में हुआ था। राजा योशियाह के शासनकाल के 13वें वर्ष (लगभग 627 ईसा पूर्व) में परमेश्वर ने यिर्मयाह को भविष्यवक्ता बनने के लिए बुलाया। कुछ वर्षों बाद, उन्हें व्यवस्था की पुस्तक मिली। इस खोज के कारण योशियाह ने पूरे देश में विश्वास के नवीनीकरण का नेतृत्व किया। उसने लोगों से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का आग्रह किया।

609 ईसा पूर्व में मिस्रियों के साथ युद्ध में योशिय्याह की मृत्यु (देखें 2 रा 23:29) यहूदा में पुनरुत्थान के अंत और देश के पतन के प्रारंभ का संकेत थी। 612 और 605 ईसा पूर्व के बीच, बेबीलोनियों ने अश्शूरियों को कुचल दिया और मिस्रियों को पीछे धकेल दिया; बेबीलोनियों द्वारा इस क्षेत्र पर नियंत्रण प्राप्त करने के साथ ही यहूदा की सुरक्षा और समृद्धि समाप्त हो गई। 605 और 586 ईसा पूर्व के बीच, बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा राज्य और यरूशलेम शहर पर आक्रमण किया, उसे अपने अधीन कर लिया और अंततः उसे नष्ट कर दिया।

इस दौरान, यहूदा के राजा प्रभु से विमुख रहे और यिर्मयाह की चेतावनियों पर ध्यान देने से इनकार कर दिया। योशियाह के बेटे, राजा यहोयाकीम (609–598 ईसा पूर्व) ने यहूदा में मूर्तिपूजा को फिर से शुरू किया और बेबीलोनियों के खिलाफ़ मिस्रियों पर भरोसा किया; वह यिर्मयाह के संदेशों का हिंसक विरोधी था। उनके बेटे यहोयाकीन ने 597 ईसा पूर्व की शुरुआत में केवल तीन महीने तक शासन किया। जब अप्रैल 597 ईसा पूर्व में बेबीलोनियों ने यहूदा को हराया, तो उन्होंने यहोयाकीन की जगह उसके चाचा सिदकिय्याह (597–586 ईसा पूर्व) को नियुक्त किया, जिन्होंने बेबीलोन के एक जागीरदार के रूप में शासन किया।

सिदकिय्याह को कमज़ोर और अनिर्णायक के रूप में दर्शाया गया है। वह यिर्मयाह का सम्मान करता था और अक्सर उससे सलाह मांगता था, लेकिन उसके पास प्रभु का अनुसरण करने का साहस नहीं था। इसके बजाय, सिदकिय्याह ने अपने प्रशासकों की सलाह का पालन किया और बेबीलोन के राजा के प्रति अपनी सेवा की वाचा को तोड़ दिया। परिणामस्वरूप, बेबीलोनियों ने जनवरी 588 ईसा पूर्व में यरूशलेम की घेराबंदी की। जुलाई 586 ईसा पूर्व में उन्होंने आखिरकार यरूशलेम की दीवारें तोड़ दीं, मंदिर को नष्ट कर दिया और शहर को तहस-नहस कर दिया। यरूशलेम में कई लोगों को बंदी बनाकर बेबीलोन ले जाया गया, हालाँकि यहूदा में कुछ लोग बचे रह गए - जिनमें यिर्मयाह भी शामिल था, जिसने यरूशलेम के विनाश के बाद के दिनों में बचे हुए समुदाय के साथ क्या हुआ, इसे दर्ज किया।

सारांश

अध्याय 1 (627 ईसा पूर्व) यह बताता है कि कैसे परमेश्वर ने यिर्मयाह को अपने दूत के रूप में चुना।

अध्याय 2–20 (627–605 ईसा पूर्व) परमेश्वर, यिर्मयाह और यहूदा की प्रजा के बीच गतिशील संबंधों को प्रकट करते हैं। यिर्मयाह के माध्यम से, परमेश्वर ने यहूदा में मूर्तिपूजकों के पूजा की कड़ी आलोचना की, उत्तर से आक्रमण की चेतावनी दी, और कठोर दंड की घोषणा की। अध्याय 11–20 में, यिर्मयाह परमेश्वर के उद्देश्यों के बारे में अधिक सीखता है।

अध्याय 21–29 (605–593 ईसा पूर्व) में यिर्मयाह की यहूदा के राजाओं, याजको और अन्य भविष्यद्वक्ताओं के साथ हुई मौखिक लड़ाइयों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यिर्मयाह के संदेशों में इन दुष्ट अगुवों की तीखी आलोचनाएँ शामिल हैं।

अध्याय 30–33 (596–588 ईसा पूर्व) एक उज्ज्वल बिंदु प्रदान करते हैं क्योंकि वे यहूदा के लोगों के लिए बहाली की संभावना पर जोर देते हैं और परमेश्वर और उनके लोगों के बीच एक नए वाचा संबंध की कल्पना करते हैं। यह दर्शन भविष्य तक पहुँचता है और एक "धर्मी वंशज" (33:15) की घोषणा करता है जो उद्धार लाएगा।

अध्याय 34–45 (605–580 ईसा पूर्व) बाबेलियों द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी, शहर की दीवारों का टूटना, और मंदिर, यरूशलेम शहर, और यहूदा राज्य के पूर्ण विनाश की कहानी बताते हैं। अध्याय 34–36 यह स्पष्ट करते हैं कि विनाश यहूदा द्वारा प्रभु के साथ अपनी वाचा तोड़ने का परिणाम था। यिर्मयाह फिर वर्णन करते हैं कि बाबेलियों के यहूदा छोड़ने के बाद (586–580 ईसा पूर्व) क्या हुआ: गदल्याह राज्यपाल की हत्या कर दी गई, और यहूदा के शेष लोग यिर्मयाह की चेतावनी के बावजूद मिस्र भाग गए।

अध्याय 46–51 (605–593 ईसा पूर्व) यहूदा के पड़ोसियों पर परमेश्वर के न्याय का संकलन है। इनमें से प्रत्येक जाति, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, को उनकी मूर्तिपूजा और परमेश्वर के चुने हुए लोगों के प्रति उनकी क्रूरता के लिए दंडित किया जाना था। कुछ जातियों को भविष्य में ईश्वरीय सहायता का वादा किया गया था। इस्राएल को बँधुआई से मुक्ति और प्रतिज्ञा किए गए देश में पुनःस्थापन का वादा किया गया था।

अध्याय 52 (586–561 ईसा पूर्व) यरूशलेम के अंतिम दिनों का वर्णन करता है, जो मूल रूप से 2 राजा 24:18–25:30 का पुनरावलोकन करता है।

यिर्मयाह

लेखक और तिथि

राजा यहोयाकीम के शासनकाल के चौथे वर्ष (605 ईसा पूर्व) में, यिर्मयाह ने बारूक को कई संदेश लिखे, जिसने उन्हें एक कुण्डलपत्र पर लिखा जो अंततः राजा को दिया गया (यिर्म 36:1–26)। राजा ने इस कुण्डलपत्र को नष्ट कर दिया, लेकिन यिर्मयाह और बारूक ने संदेशों को फिर से लिखा और "बहुत सी बातें बढ़ा दी गई" (36:32)। इस दूसरे कुण्डलपत्र की सामग्री संभवतः अध्याय 2–20 तक फैली हुई है। यिर्मयाह की पुस्तक का बाकी हिस्सा बाद में लिखा गया प्रतीत होता है और बढ़ते हुए संकलन में जोड़ा गया है। पुस्तक में यिर्मयाह के मिस्र पहुंचने तक की घटनाएँ शामिल हैं, इसलिए ऐसा लगता है कि पुस्तक मूल रूप से 580 ईसा पूर्व तक पूरी हो गई थी।

यिर्मयाह

हस्तलिपियाँ

यिर्मयाह के दो बहुत अलग-अलग पाठ संरक्षित किए गए हैं, जो संदेशों के दो अलग-अलग संग्रहों का प्रतिनिधित्व करते हैं। पहला, इब्रानी मसोरैटिक लेख, बाबेली बँधुआई के बीच संरक्षित किया गया था और यिर्मयाह के लगभग सभी अंग्रेजी अनुवादों का आधार है। दूसरा पाठ मिस्री शरणार्थियों के बीच संरक्षित किया गया था और यूनानी अनुवाद (सेप्टुआजिंट) का आधार बना, जिसे सिकन्दरिया, मिस्र में यहूदियों के विद्वानों द्वारा लगभग 250 ईसा पूर्व में तैयार किया गया था। सेप्टुआजिंट पाठ इब्रानी मसोरैटिक लेख की तुलना में लगभग 2,700 शब्द छोटा है, और यह कुछ सामग्री को पुनर्व्यवस्थित करता है।

साहित्यिक विशेषताएँ

संदेशवाहक प्रणाली। यिर्मयाह के पाठ में संचार की एक संरचना का प्रभुत्व है जिसे "संदेशवाहक प्रणाली" कहा जाता है, जो प्राचीन पश्चिमी एशिया की राजकीय सरकारों में आम थी और आज भी उपयोग में है। एक देश का शासक दूसरे देशों को मौखिक और लिखित संदेश देने के लिए एक व्यक्ति का चयन करता था। संदेशवाहक संदेश देते समय अपने शासक के अधिकार को अपने साथ रखता था। प्राप्तकर्ता संदेश को स्वीकार या अस्वीकार करता था और जवाब भेजता था। यदि प्राप्तकर्ता ने संदेश को अस्वीकार कर दिया, तो वह दूत का अपमान कर सकता था और युद्ध की तैयारी कर सकता था (देखें 2 शमू. 10:1–19)। संदेशवाहक अपने शासक के पास लौटकर उसे खबर देगा, जो यह तय करेगा कि कैसे प्रतिक्रिया देना है।

न्यायिक ढांचा। यिर्मयाह के कई संदेशों में न्यायिक ढांचा और शब्दावली है। न्यायालय की स्थापना पुस्तक के आरंभ में प्रभु के कथन के साथ की गई है, "इस कारण यहोवा यह कहता है, मैं फिर तुम से विवाद, और तुम्हारे बेटे और पोतों से भी प्रश्न करूँगा" (यिर्म 2:9)। प्रभु अभियोगकर्ता, न्यायाधीश, और जल्लाद की भूमिकाएं निभाते हैं। अभियोगकर्ता के रूप में, वे यहूदा के खिलाफ पाप के आरोप और सबूत लाते हैं। प्रतिवादी अपने तर्क प्रस्तुत करने के बाद, प्रभु न्यायाधीश के रूप में सजा सुनाते हैं और फिर जल्लाद के रूप में उसे लागू करते हैं।

कथाएँ। यिर्मयाह में ऐतिहासिक कथाएँ शामिल हैं जिनमें भविष्यद्वक्ता संकट के समय में राजाओं, अधिकारियों, याजकों, अन्य नबियों और आम लोगों से संवाद करते हैं। इस पुस्तक में कई आत्मकथात्मक कथाएँ भी शामिल हैं। कथात्मक खंड अक्सर एक आदेश की घोषणा के साथ समाप्त होते हैं, जो आमतौर पर काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत होता है।

अर्थ और संदेश

पुराने नियम के इस्राएल में मूर्तिपूजा और परमेश्वर की आराधना के बीच युद्ध छिड़ा हुआ था। यिर्मयाह ने इस्राएलियों को बार-बार प्रभु के साथ उनकी वाचा की याद दिलाई और कहा कि वह उनकी सच्ची, हार्दिक और अनन्य भक्ति की अपेक्षा करता है। एक महत्वपूर्ण अंश (यिर्म 10:1–16) में, यिर्मयाह स्पष्ट रूप से मूर्तिपूजा की मूर्खता की तुलना इस्राएल के परमेश्वर की ऐश्वर्य, महिमा, पवित्रता और सामर्थ्य से करता है।

यरूशलेम और यहूदा के लोग एक बड़े संघर्ष का सामना कर रहे थे। यिर्मयाह ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि वे अन्यजाति मूर्तियों की आराधना जारी रखते हैं, तो वे अपने पवित्र शहर और मन्दिर, अपने प्रियजनों, और अपनी संपत्ति और स्वतंत्रता को खो देंगे। लोगों ने अपनी स्थिति से बचने के लिए अवज्ञा, अहंकार, गठबंधन, और क्रोध का सहारा लिया, लेकिन युद्ध की घटनाओं ने उन्हें शीघ्र ही पूर्ण निराशा और मृत्यु में धकेल दिया। फिर भी, वे किसी अन्य कार्यवाही का चयन करने में असमर्थ दिखे। मूर्तियों और रीति रिवाज की जादुई शक्ति पर विश्वास करना बंद करना और मूर्तिपूजकों के त्योहारों और यौन स्वतंत्रता के आकर्षण और उत्साह को छोड़ना बहुत बड़ा नुकसान लग रहा था। मंदिर और यरूशलेम के नष्ट होने की संभावना अकल्पनीय थी। इसलिए केवल कुछ लोगों ने पश्चाताप किया।

भावुक विनती के साथ, प्रभु ने अपने अनुग्रहपूर्ण उद्धार का मार्ग सुझाया। यदि लोग ईमानदारी से और पूरी तरह से अपने जीवन से मूर्तिपूजा की दुष्टतापूर्ण और कामुक प्रथाओं को हटा दें, बिना किसी शर्त के प्रभु के प्रति समर्पित हो जाएं, और उनकी नैतिक आवश्यकताओं को पूरा करें, तो प्रभु क्रोधित होना बंद कर देंगे और उन्हें फिर से अपने लोगों के रूप में स्वीकार करेंगे। यहां तक कि जब बर्बादी, मृत्यु और बँधुआई की आपदाएं वास्तविकता बन गईं, तब भी प्रभु ने उन बचे हुए लोगों को बचाने का वादा किया जो उनकी सेवा करेंगे। उन्होंने बंदियों को उनकी मातृभूमि में वापस लाने और उन्हें शांति और समृद्धि प्रदान करने का वादा किया।

परमेश्वर की दया का सबसे उज्ज्वल वर्णन अध्याय 30–33 में मिलता है, जो एक नई वाचा और एक नए राजा का वादा करता है। उखाड़ने और गिराने के बजाय, परमेश्वर रोपेगा और पुनर्निर्माण करेगा (1:10; 31:28)। हालाँकि, यिर्मयाह के दिनों में केवल कुछ ही लोगों ने पश्चाताप किया।

इन सबमें, भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने प्रभु की आज्ञा (1:17–19) और अपनी स्वयं की इच्छाओं के बीच एक गहरे तनाव का अनुभव किया। प्रभु की आज्ञा थी "जाओ ... और बताओ," जबकि भविष्यद्वक्ता अपने पड़ोसियों के साथ शांति बनाए रखना चाहता था (देखें 20:8–9)। उसने अपने लोगों के साथ एक गहरी एकजुटता महसूस की, और न्याय और विनाश के भयानक शब्दों को सुनाने के लिए उसे बुलाया गया, जिसने उसकी स्वयं की आत्मा को गहराई से चोट पहुंचाई। पुराने नियम के किसी भी अन्य भविष्यद्वक्ता से अधिक, यिर्मयाह ने हमें अपने हृदय को देखने दिया क्योंकि वह आज्ञा मानने के लिए संघर्ष कर रहा था (15:16–18; तुलना करें मत्ती 26:36–42)।